Dr. Dinesh Prasad Kamal
Professor,
Ancient Indian History and Archaeology
Patna University
Mob:9431047888

Email: dineshkamal78@gmail.com

Varta

आन्वीक्षिकी - दर्शन

- विशेष रूप से इसके अभिप्राय है, जीविका का साधन का साधन।
- वार्ता का अर्थ सम्भवतः वैश्यों के द्वारा निर्धारित कर एवं, क्योंकि वैश्यों के तर्कों के द्वारा व्यवसाय का विकास हुआ, जो सर्व हमारे जीवन के लिए उचित वस्तुओं का उपलब्ध करते थे।
- संस्कृत साहित्य में वार्ता को भिन्न अर्थों का प्रयोग किया गया है।

i) वैश्यों का व्यवसाय

ii) व्यवसाय से संबंधित विधियां

II. Purana

- जैसे की - आन्वीक्षिकी - दर्शन, त्रयी - तीनों वेद, वार्ता - उपयोग, विज्ञान तथा दण्डनीति - राजनीति
- फिर ही नाम लेने से वार्ता तीनों के मूल को ज्ञान का बोध

III. • प्राचीन भारतीय आर्थिक जीवन - वैश्यों का बहुत बड़ा भाग - कृषि, उद्योग, व्यापार

- निर्धन वर्ग और राज्य के धन से - आर्थिक सहयोग
- व्यापारियों और व्यापार - विधियां -
- समृद्धि उत्पन्न और न्यायोचित वितरण, कृषि एवं पशुपालन विकास, उपभोक्ता व्यवसायिक उत्पन्न
- कौटिल्य ने यह विधियां का उदय बताया, वार्ता को अर्थ-धर्म की विधा कहा है।
- शुक्रनीति ने लाभ - हानि के शास्त्र को वार्ता की संज्ञा।

आइडिया शेयर कर सकता॥

• डॉ॰ बनर्जी के शब्दों में सम्पत्ति वार्ता के अध्ययन का श्रेय कहा जा सकता है।

(v) **वैश्यों के तीन प्रमुख व्यवसाय**

(i) कृषि, पशुपालन, वाणिज्य

(vi) वार्ता का संबंध आर्थिक जीवन के विधान का अंग

- ~~मलिका~~ कृषि को खेती से, भूमि तथा कृषिव्यवस्था,
- व्यापार तथा वाणिज्य
- पैसों और श्रेणियों
- श्रम और मजदूरी
- साहूकार और ब्याज
- एक सुव्यवस्थित कर प्रणाली।